

हिमालयी राज्यों की नियति बनती प्राकृतिक आपदाएँ

प्राचीनतम् जपवान् उत्तराखण्ड जा छेनामदा प्रदर्श साहा रामा
हिमालयी राज्यों की नियति बनती जा रही है। उत्तराखण्ड के
उत्तरकाशी जिले के धराली में बादल फटने के कारण स्थीर गंगा
नदी में बाढ़ आ जाने से जो भयंकर विपदा आई उससे पूरा देश
सहम गया है। चंद सेकंडों ही में चहल-पहल भरा बाजार और
इलाका तहस-नहस हो गया। दूर गांवों में रहने वाले ग्रामीण, जो
यह नजारा देख रहे थे, स्थानीय लोगों को सावधान करने और वहाँ
से भागने के लिए खोखते रह गए। पानी और मलबे के शोर में कोई
उनकी चेतावनियों को नहीं सुन पाया। वह सब इतना तेजी से घटा
कि किसी को संभलने का मौका तक नहीं मिल पाया और देखते
ही देखते भवन, दुकानें, होमस्टे और होटल बह गए। पूरा धराली
बाजार मलबे से पट गया है, और इस कारण हुए जान-माल के
नुकसान का पता लगने में लंबा वरत लगेगा। धराली गंगोत्री धाम
से करीब 20 किमी पहले पड़ता है, और चार धाम यात्रा का प्रमुख
पड़ाव है। शांत बहने वाली खीर नदी पहले ग्लेशियर और फिर घने
ज़ंगलों से होकर बहती है। इसलिए इसका पानी अत्यंत शुद्ध है।
आगे चल कर यह भागीरथी से मिल जाती है। इसलिए इसे खीर
गंगा कहा जाता है लेकिन बरसात में समस्त पहाड़ी नदियों की
तरह यह नदी भी ऊँगरूप दिखाती है। पहले भी खीर गंगा में भीषण
बाढ़ आ चुकी है। इतिहास टटोलें तो खीर गंगा में सबसे भीषण
बाढ़ 1835 में आई थी। तब नदी ने सारे धराली कस्बे को पाट
दिया था। बाढ़ से यहाँ भारी मात्रा में मलबा (गाद) जमा हो गया
था। कहते हैं कि अभी यहाँ जो भी बसावट है, वह उस समय नदी
के साथ आई गाद पर स्थित है। 1978 में धराली से नीचे डबराणी
में एक डैम टूट गया था। इससे भागीरथी में भयंकर बाढ़ आ गई
थी और कई गांव बह गए थे। धराली और आसपास के इलाकों में
बादल फटने, भूस्खलन की घटनाएं होती रहती हैं। लेकिन पहली
बार इतनी व्यापक क्षिति हुई है। वर्ष 2013 की केदारनाथ ग्रासदी
के बाद लगा था कि राज्य सरकार और प्रशासन ने सबक लिया है,
और अब नदी-नाले और इनके किनारे मानवीय हस्तक्षेप से बचे
रहेंगे लेकिन दुखद बात है कि गंगा के किनारों का हाल 2013
से भी बुरा हो गया है। बादल फटना हिमालय क्षेत्र में विनाशकारी
प्राकृतिक आपदाओं में से एक है। इसकी वजह है बहुत कम समय
में किसी छोटे इलाके में भारी बारिश का होना। जलवायु परिवर्तन
के कारण इन घटनाओं की आशंका लगातार बढ़ रही है।

डॉ. अंजय खेमरिया अदालतों को इस मामले में हस्तक्षेप संख्या कम नहीं हो रही है। जाहिर है से बहुत जटिल है। ऐसा है कि विवाह संबंधों के जरिये और 2013 के संशोधनों के जरिये हो रहा है। यह भी समझना होगा भारत में विवाह संबंधों की आयु 16 करने का दायरे में कौन-कौन संघीय विवाह है।

ANSWER

सुप्राम काट म निपुण सक्सना
बनाम संघ के विचाराधीन मामले

जाना सब के विचारणा नामहीन की सुनवाई चल रही है। देश की पर्याप्त एडिशनल सॉलिसिटर जनरल और न्याय मित्र इंविरा जय सिंह ने कोर्ट के सामने दलील दी है कि सहमति से यौन रिश्तों की आयु सीमा लड़कियों के लिए 18 से घटाकर 16 कर दी जानी चाहिए। इससे पहले पूर्व मुख्य न्यायाधीश डॉ बाई चंद्रचूड़ भी सार्वजनिक रूप से ऐसा ही आग्रह केंद्र सरकार से कर चुके हैं। मेघालय, मद्रास, बॉम्बे, कर्नाटक और मप्र समेत अन्य हाईकोर्ट भी इसी लाइन पर केंद्र सरकार से पाक्सो कानून में बदलाव के लिए कहते रहे हैं। यूनिसेफ इंडिया ने कुछ समय पूर्व एक ऐसी ही रिपोर्ट में दाव किया था कि देश में पाक्सो कानून युवाओं को अपराधी बना रहा है। हालांकि, बाद में इस रिपोर्ट को वापस ले लिया गया। अभी देश में पाक्सो अधिनियम लागू है जिसके तहत सहमति से यौन रिश्तों के लिए 18 साल की आयु निर्धारित है। इससे कम के सभी मामल अपराध की श्रेणी में गिने जाते हैं। केंद्र सरकार ने अपने हलफानामे में स्पष्ट रूप से इस बात को दोहराया है कि सहमति से यौन रिश्तों की आयु सीमा घटाने का उसका कोई विचार नहीं है और

से बचना चाहिए। जहिर है मौजूदा सरकार आंदोलनजीवी एनजीओ और इनसे जुड़े कानूनविदों के दबाव में कोई निर्णय नहीं करने जा रही है। अप्रैल में पाक्सो कानून 2012 में निर्भया कांड के बाद अस्तित्व में आया है और इसका उद्देश्य नालिंगों को यौन शोषण से बचाना है। दूसरी तरफ सुप्रीम कोर्ट यह सुनिश्चित करने की लगातार कोशिश कर रहा है कि युवाओं को पाक्सो कानून के तहत यौन रिश्तों के लिए जेल नहीं जाना पड़े। इसके लिए युवा मन के रोमांटिक रिलेशनशिप को आधार बनाया जा रहा है। पिछले सप्ताह सुप्रीम कोर्ट में एमिक्स क्लूसी इंदिरा जय सिंह ने कहा कि यौन स्वाधता मानव गरिमा का हिस्सा है और किशोरों को अपने शरीर के बारे में विकल्प चुनने की क्षमता से वंचित करना सविधान के अनुच्छेद 14, 15, 19 एवं 21 का उल्लंघन है। उन्होंने पिछले तीन साल में पाक्सो केसों में 180 प्रतिशत के उछाल और दोषसंदिग्दी की घटती दर का हवाला देकर आयु सीमा घटाने की मांग की। ध्यान देने वाली बात यह है कि एक तरफ सरकार लड़कियों के विवाह की आयु 18 से बढ़ाकर 21 करने पर विचार कर रही है क्योंकि बाल विवाह निषिद्ध कानून के प्रभावी होने के बावजूद देश में इनकी

केवल कानून से समाज में बुरायों का खात्मा नहीं हो जाता है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़े बताते हैं कि देश में नाबालिग बेटियों के साथ यौन अपराध करने वाले 50 फीसदी उनके आसपास के कुटुम्बीजन या पहचान वाले ही होते हैं। ऐसे में अगर सहमति से यौन संबंधों की आयु घटा दी जाती है तो पारिवारिक-सामाजिक दबाव में शिकायतों की संख्या नगण्य ही रह जायेगी। सच्चाई यह है कि सहमति की आड़ में व्यक्त आदमी नाबालिग लड़कियों से व्यभिचार करेंगे और इस कथित सहमति के संबंधों की परिणति से पैदा हुए बच्चे क्या अवैध नहीं कहलायेंगे? विदेशी धार्मिक सामाजिक मान्यताओं में यह रिप्रेट स्वीकार्य हो सकती है परंतु भारत में दैहिक आजादी के नाम पर किशोरी मां बनी लड़कियों का जीवन कैसा होगा इसकी कल्पना करना कठिन नहीं है। तथ्य यह है कि संवैधानिक ढांचा स्पष्ट रूप से इस कानूनी धारणा का समर्थन करता है कि 18 वर्ष से कम आयु का व्यक्ति यौन गतिविधियों के लिए वैध सहमति देने में असमर्थ है। लड़कियों के विवाह की आयु 18 वर्षांशीरित किये जाने का उद्देश्य भी यही था। 1889 में भारत में आयु सीमा 11 वर्ष थी, जिसे 1891, 1925, 1940

की लोक संस्कृति 25 साल तक ब्रह्मचर्य आश्रम की वकालत करती है और 1925 में महात्मा गांधी ने बाकायदा यंग इंडिया में लेख लिखकर यह कहा था कि मैं 25 साल की आयु की महिला को ही विवाह संबंधों के लिए योग्य स्वीकार करूँगा। वस्तुतः भारतीय लोकजीवन, इसकी संयमित और कर्तव्योबोध केंद्रित जीवनचर्या के विरुद्ध पिछले 70 साल से एक संगठित तंत्र पूरी व्यवस्था पर हावी होकर काम करता रहा है। ताजा नैरिटिव इसी इकोसिस्टम का हिस्सा भर है।

पिछले कुछ सालों में देश के विभिन्न उच्च न्यायालयों में ऐसी याचिकाओं की संख्या बढ़ी है जो पॉक्सो एक्ट के आयु से जुड़े प्रावधान को इसलिए हटवाना चाहते हैं क्योंकि यह मुस्लिम पर्सनल लॉ के लिए प्रेरणाती का कारण बन गया है। मुस्लिम लॉ कहता है कि बालिका जैसे ही रजस्वला होगी वह विवाह के योग्य मानी जायेगी। कभी यह आयु 15 साल थी लेकिन आज बदलती जीवनशैली में इसे 12 भी माना जाता है। किसी बालिका की इस आयु को सुक्षित और जबाबदेह यौन संबंधों के लिए बया कोई समाज खुद को सभ्य और सुसंस्कृत कह सकता है? सवाल यह भी है कि सहमति से

दायरे में कौन-सी भारतीय लड़कियाँ आएंगी। क्या हमारे समाज में यौन विरोधी कभी इस उन्मुक्तता के स्तर पर नहीं रहे हैं जहां परिवार में 16 साल के बाद बेटियों को यौन संबंधों के लिए खुली आजादी रही हो। यह ठीक वैसा ही दुराग्रही आझ्यान है जो शाहबानों पर चुप रहता है या ट्रिपल तलाक में सत्ता का फासीवादी एवं साम्प्रदायिक वेहरा तलाश लेता है। अल्पसंख्यक तुष्टिकरण और लव जिहाद के अरोपियों को एक विधिक गलियारा उपलब्ध कराना भी इस आझ्यान का मूल मन्त्र है। इंडियनेंडेंट थाट बनाम यूनियन ऑफ इंडिया के मामले में सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस मदन बी लोकर एवं दीपक गुप्ता की पीढ़ी यह स्पष्ट कह चुकी है कि उनकी राय में 18 साल से कम आयु की लड़की के साथ यौन संबंध बनाना बलात्कार है चाहे वह विवाहित हो या नहीं। वैसे पाकसों को लेकर युवाओं के अपराधीकरण के दावे प्रामाणिक नहीं हैं क्योंकि डेटा एविडेंस फॉर जस्टिस रिफर्मेंट के सहयोग से विधि सेंटर फॉर लीगल पॉलिसी द्वारा जारी एक रिपोर्ट 'ए डिकोड ऑफ पॉक्सो' में पिछले दस सालों में दर्ज 4 लाख प्रकरणों के अध्ययन में रोमांटिक लव से जुड़े अरोपियों का आकड़ा 20 फॉसदी से भी कम बताया गया है।

अमेरिका भारत टकराए-चीन भारत करीब आए-रूस ने धुवीकरण के समीकरण बनाए- पश्चिमी विश्व के लिए भू- राजनीतिक भूचाल लाए

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं

वैश्विक स्तरपर वैसे तो अमेरिका की अनेक देशों के साथ टकराहट, फिर उनके उपर आर्थिक सामायिक प्रतिबंधों को लगाना, वैश्विक वित्तीय संस्थाओं का मुंह मोड़ना, जैसे अनेक किस हम सुनते रहते हैं, जिसके कारण वैदेश आर्थिक खस्ताहाली के शिकार हो जाते हैं। पर परंतु वर्तमान भारत अमेरिका के हालातों को देखते हुए, मैं एडवोकेट किशन सनमुखदाप सभावनानी गोदिया महाराष्ट्र, आज 45 वर्षों के निखन कार्य के इतिहास में व शायद भारत-अमेरिका दोस्ती के इतिहास में पहली बार इनी एकहाट देख रहा हूं, कि भारत पर 50 पेस्टरीफ लगाना व इसके बढ़ाने की धमकी देना नथा फिर प्रतिबंधों की बारी भी आ सकती है, जिससे हमारे प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक, लॉलिक्ट्रिकल व फार्मेसी इत्यादि क्षेत्रों में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। जिसपर मेरा मानना है कि इस संभावित होने वाले प्रभाव पर रणनीतिक रूप से काम करना बहुरुप हो गया होगा? इसके साथ ही भारत का अपनी रणनीति कूटनीति पर भी काम शुरू हो गया होगा। अभी पीएम की रूसी राष्ट्रपति से बात हुई, संभवत वे नवंबर दिसंबर में भारत दौरे पर आ सकते हैं। वही हमारे पीएम 28 से 30 अगस्त 2025 को जापान, फिर 31 अगस्त तक जाएंगे, जिसमें चीनी विदेश मंत्रालय के अनुसार भारतीय पीएम के आने की उत्सुकता देखी गई, व संभावना है कि इस टैरिफ रूपी आपदा को अवसर के रूप में बदलने की रणनीति हो सकती है, जिसने अमेरिका को भी सख्तों में डाल दिया है? क्योंकि मुझे ऐसा लग रहा है कि जेस सोच के साथ ट्रंप ने भारत पर इनी भारी नात्रा में टैरिफ लगाया है, वह सोच शायद उल्ली पड़ रही है? और हो सकता है कि बातचीत को हथियार बनाकर टैरिफ को हटा भी दिया जाएगा जो पश्चिमी नियमों का अनुसार भारत को बाबूजी! यह भारत है अमेरिका टकराहट अंतर्राष्ट्रीय शक्ति को प्रभावित कर सकता है। अगर हम अमेरिका द्वारा गए टैरिफ का प्रभाव भू-पहने की करें तो, अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक हथियारों का इस्तेमाल नहीं है, लेकिन जब यह सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था चलाता है तो उसके प्रभाव बाल ही में अमेरिका ने भारत का फैसला किया और साथ की संभावना के संकेत भी न केवल भारत-अमेरिका संबंध कारण बन रहा है, बल्कि इबड़ा खतरा छिपा है-भारत का संभावित ध्रुवीकरण। मजबूत हुआ, तो अमेरिका भू-राजनीतिक चुनौती बन जाएगी, व दशकों से कायम आर्थिक प्रभुत्व को हिला देगी। अमेरिका बीच हाल के समय में बदल कूटनीति और भू-राजनीतिक एक नए मोड़ की आहट-भारत डायरेक्ट मामले पर कर आए हैं, वे केवल द्विसीमित नहीं रहेंगे, बल्कि यह शक्ति-संतुलन की दिशा सकते हैं। इस मुद्दे ने जहां भ

नहीं हांग गया है, अगर तो तील इरान इत्यादि में एक नया मोड़ शब के लिए भूमिका है। इसलिए आज हारी के सद्योग से वर्चार करेंगे, सुनिए भारत डायरेक्ट संतुलन की दिशा में। साथियों बात भारत पर लगाए जानीकान्ति प्रभाव और द्वितीय राजनीति में ल काई नई बात थियार दुनियाँ की यानी अमेरिका, वैश्विक होते हैं। पर टैक्स लगाने ही प्रतिबंध लगाने दिए। यह कदम विधायिकों में तनाव का के पीछे एक और चीन और रूस ह गठजोड़, यदि के लिए एक ऐपी कता है जो उसके और रणनीतिक का और भारत के तानाव वैश्विक क समीकरणों में देता है। अमेरिका जो मतभेद उभर क्षेत्रीय विवाद तक पूरी अंतरराष्ट्रीय गतों प्रभावित कर भरत और अमेरिका के बीच अविश्वास की रेखा को गहरा किया है, वहीं दूसरी ओर यह चीन के लिए अवसर का द्वार खोलता दिख रहा है। अगर भारत और चीन अपने पुराने मतभेदों को किनारे रखकर किसी साझा रणनीति पर आगे बढ़ते हैं, तो पश्चिमी बल्ड की राजनीतिक-आर्थिक बुनियाद पर गहरा असर पड़ सकता है। साथियों बात आग हम अमेरिका टकराव को अमेरिका का सबसे बड़ा राजनीतिक दुष्परिणाम होने की करें तो, भारत पर लगाए गए अमेरिकी टैक्स का असर केवल व्यापारिक संतुलन तक सीमित नहीं रहेगा। यह एक ऐसा सदेश है जो अमेरिकी नीति-निर्माताओं की सोच को दर्शाता है-वे किसी भी देश के साथ अपने हितों के विरुद्ध जाने पर कठोर आर्थिक कदम उठा सकते हैं। लेकिन भारत जो पिछले कुछ वर्षों में न केवल वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व करने की स्थिति में आया है, बल्कि पश्चिमी देशों के लिए भी एक रणनीतिक साझेदार बनकर उभरा है, इस तरह के दबाव को आसानी से स्वीकार करने वाला नहीं है। भारत की आर्थिक नीतियों और रणनीतिक स्वायत्तता पर जोर देने की प्रवृत्ति अमेरिका की उम्मीदों से मेल नहीं खाती, और यही टकराव की जड़ है। अमेरिका के इस कदम का सबसे बड़ा रणनीतिक दुष्परिणाम यह हो सकता है कि भारत और चीन-दोनों एशियाई द्विगाज, जिनके बीच पिछले वर्षों में सीमा विवाद और भू-राजनीतिक तनाव रहे हैं - आर्थिक और रणनीतिक मुद्दों पर एक साझा मंच पर आ सकते हैं। चीन पहले से ही अमेरिका के टैरिफ और प्रतिबंधों का सामना कर रहा है, और वह हर उस साझेदार की तलाश में है जो उसकी अमेरिका-विरोधी रणनीति को मजबूती दे सके। यदि भारत, अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए, अमेरिका के दबाव से निकलकर चीन के साथ कुछ क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाता है, तो यह अमेरिकी रणनीति के लिए बड़ा झटका होगा जिससे उभरने वाली संभावना भी बढ़ जाएगी।

में उसे वक्त लगेगा। साथियों बात ऊजासुरक्षा, सैन्य तकनीक, और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर समन्वित मतदान तक दृढ़ता से फैला सकता है। साथियों बात अगर हम अमेरिका की मौजूदा विदेश नीति अक्सर अल्पकालिक रणनीतिक लक्ष्यों पर केंद्रित दिखाई देने की करते तो, दीर्घकालिक भू-राजनीतिक परिणामों का पर्याप्त आकलन नहीं किया जाता। भारत पर टैक्स और संभावित प्रतिबंध लगाने का नियन्त्रण भी इसी श्रेणी में आता है। अमेरिका सोचता है कि आर्थिक दबाव डालकर वह भारत को अपने शर्तों पर व्यापार समझौते करने के लिए भरकर कर सकता है, लेकिन वह यह भूल रहा है कि भारत अब एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जो अपनी वैश्विक भूमिका और प्रतिष्ठा के प्रति बेहद सजग है, और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी स्वायत्त पहचान बनाए रखना चाहता है। भारत की विदेश नीति मल्टी-अलाइनमेंट्स यानी बहु-संबंधों की नीति पर आधारित है, जहां वह विभिन्न शक्तियों के साथ अलग-अलग मुद्दों पर साझेदारी करता है। यदि अमेरिका के साथ तनाव बढ़ता है, तो भारत के पास चीन और रूस के साथ सहयोग बढ़ाने का विकल्प हमेशा रहेगा। ऐसे में, भारत-चीन-रूस का एक सामरिक और आर्थिक ध्रुव बनना, भले ही यह पूर्ण गठबंधन न हो, लेकिन इतना पर्याप्त होगा कि अमेरिका और उसके सहयोगियों के लिए यह एक गंभीर चुनौती बन जाए। अंततः, अमेरिका को यह समझना होगा कि भारत पर टैक्स लगाना और प्रतिबंधों की धमकी देना केवल एक द्विपक्षीय विवाद नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी कड़ी हो सकती है जो वैश्विक शक्ति-संतुलन को बदल दे। भारत, चीन और रूस का संभावित ध्रुवीकरण एक नए शीत युद्ध जैसी स्थिति पैदा कर सकता है, जहां अमेरिका को न केवल सैन्य और कूटनीतिक मोर्चे पर, बल्कि आर्थिक और वित्तीय मोर्चे पर भी एक साथ कई विरोधियों का सामना करना पड़ेगा।

जियो पॉलिटिक्स का नया हथियार बना टैरिफ

डा. मयक चतुर्वदा

टैरिफ, जिसे अब तक केवल व्यापार घाटा सुधारने या घेरेलू उद्योगों की रक्षा के अर्थिक औजाराएँ के रूप में देखा जाता था, डोनाल्ड ट्रंप के कार्यकाल में एक नए रूप में उभरकर सामने आया है, आज यह जियो पॉलिटिक्स का नया हथियार बनकर उभरा है। वॉशिंगटन पोस्ट द्वारा उजागर अमेरिकी प्रशासन के अंति-प्रत्याहारी दृष्टि से देखे जाने वाले

जिनका पारंपरिक रूप से शुल्क समझौतों से कोई लेना-देना नहीं होता, जैसे रक्षा अड्डों की अनुमति, सैन्य तैनाती का समर्थन, पर्यावरण नीतियों में बदलाव या हथियार खरीद की शर्तें। यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की परंपरागत समझ को बदल देने वाला कदम है। भारत इसका प्रमुख उदाहरण है। वॉशिंगटन पोस्ट की यह रिपोर्ट बताती है कि व्हाइट हाउस ने भारत पर अमेरिकी रक्षा उपकरण खरीदने और अमेरिका के साथ रक्षा सहयोग बढ़ाने का दबाव बनाने के लिए टैरिफ को हथियार बनाया। रूस से कच्चा तेल खरीदने के बहाने 50 प्रतिशत तक टैरिफ लगाने की धमकी दी गई, जिसे बाद में लागू भी किया गया। भारत से अपेक्षा थी कि वह न केवल रक्षा बजट बढ़ाए बल्कि सामरिक मुद्दों पर अमेरिका के साथ पर्याप्त रूप से सरीखित हो, ताकि टैरिफ में रियायत मिले। यह दबाव अमेरिका की इंडो-पौरिफिक रणनीति का हिस्सा था, जिसका लक्ष्य भारत को रूस से दूर करना और चीन के खिलाफ गठजोड़ में मजबूती लाना था। यह नीति केवल भारत तक सीमित नहीं रही। दक्षिण कारिया से रक्षा चर्च 2.6 प्रतिशत से बढ़ाकर 3.8 प्रतिशत करने और



अमेरिकी सैनिकों की तैनाती पर अधिक खर्च वहन करने की मांग की गई। प्रारंभिक मसौदों में सियोल से चीन के खिलाफ सार्वजनिक बयान जारी करने तक का सुझाव था। कंबोडिया पर 49 प्रतिशत टैरिफ की धमकी देकर अमेरिकी नौसेना को वहाँ के रियाम नेवल बेस पर प्रशिक्षण अभ्यास की अनुमति दिलाने का प्रयास हुआ। ब्राजील को चेतावनी दी गई कि आग पूर्व राष्ट्रपति बोल्सोनारो के खिलाफ कानूनी कार्रवाई नहीं रोकी गई तो 50 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया जाएगा। कोलंबिया में अवैध अप्रवासियों को बाहर निकालने के लिए टैरिफ का इस्तेमाल किया गया। रिपोर्ट का एक और चौकाने वाला पहल यह है कि अमेरिकी विदेश विभाग ने कुछ मौकों पर निजी कंपनियों, जैसे ऊज क्षेत्र की शेवरैन और एलन मस्क की स्टारलिंक के लिए अन्य देशों से रियायतें दिलाने के विकल्पों पर चर्चा की। यह अंतरराष्ट्रीय नीतियाँ और कॉर्पोरेट हितों के खतरनाक मेल का संकेत देता है। वस्तुता इसीलिए आज अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि कार्यालय में 25 साल काम कर चुकीं बैंडी कटलर कहर्त हैं कि उन्होंने पहले कभी किसी व्यापार समझौते में इस तरह की शर्त नहीं देखीं। यह अंतरराष्ट्रीय व्यापार की परंपरागत “नॉर्म्स” से एक बड़ा विचलन था, जो विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) जैसे संस्थाओं की भूमिका और वैश्वव्यापार व्यवस्था की निष्पक्षता पर विचलित लगाता है। इसे अब ह

भारत के सद्भ म आर आधक गंभीरता से देख सकते हैं; वस्तुतः भारत के लिए यह नीति कई स्तरों पर चुनौती है। पहली- रणनीतिक स्वायत्ता की रक्षा। भारत दशकों से बहुधीरीय कूटनीति अपनाना रहा है, जिसमें रूस, अमेरिका, यूरोप, जापान और खाड़ी देशों के साथ संतुलन साधा जाता है। अमेरिकी दबाव इस संतुलन को बिगाढ़ सकता है। स्वायत्ता की रक्षा के स्तर पर यह भारत को कमजोर करने वाली है। दूसरी- ऊर्जा सुरक्षा के क्षेत्र में। रूस से सस्ता कच्चा तेल भारत की अर्थव्यवस्था के लिए अहम है; टैरिफ धमकियां इस आपूर्ति को बाधित कर सकती हैं। हालांकि अभी ऐसा हुआ नहीं, पर कोशिश तो यही है। तीसरी बात यह कि रक्षा खरीद में विविधता के स्तर पर केवल अमेरिकी हथियारों पर निर्भरता तकनीकी और रणनीतिक स्वतंत्रता को सीमित कर सकती है। जिसके लिए ड्रैप ने अपने प्रयास जारी रखे हुए हैं। यह एक तथ्य है कि आर्थिक साधनों का इस्तेमाल राजनीतिक दबाव के लिए नया नहीं है। औपनिवेशिक दौर में व्यापार रियायतें राजनीतिक नियंत्रण का औजार थीं। शीत युद्ध में अमेरिका

नार सावधत सघ न सहायता, थिथियार और व्यापार समझौतों को आमरिक प्रभाव के लिए इस्तेमाल कर्या। फर्क यह है कि ट्रंप सुग में वह सब खुले तौर पर, व्यापक माने पर और निजी कॉर्पोरेट हितों का साथ जुड़कर हो रहा है। कहना होगा कि ट्रंप प्रशासन की टैरिफ नीति अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में एक नया और शुरू किया है, जिसमें आर्थिक और नौजारों को राजनीतिक और आमरिक लक्षणों के लिए खुलकर योग किया जा रहा है। भारत जैसे देशों के लिए यह आवश्यक है कि वे इस नई हकीकत को समझें, उसके नवरूप अपनी रणनीति बनाएं और आत्मनिर्भरता के साथ-साथ बहुआयामी कूटनीतिक संबंधों को बज़बूत करें। अतः कहना होगा कि ट्रिफ अब सिर्फ व्यापार संतुलन का साधन नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय नौजनीति का सक्रिय हथियार है, ऐसे ही इसकी समझ और जवाबदेही किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति की मजबूती का पैमाना होगी। इस स्थिति से निपटने के लिए फिलहाल भारत को यही कारण है कि वह बहुआयामी नीति अपनाए। नज़र और रक्षा आयत के खोतों में विविधता लेकर आए।

वृष्टिक राशि - आज का दिन आपके लिए बेहतर रहेगा। आज आप कुछ समय मनोरंजन सम्बन्धी गतिविधियों में बिताएंगे। आज आपके द्वारा कुछ सराहनीय काम किये जा सकते हैं, जिससे आपके मान-सम्पान में बढ़ोतरी होगी। आज संतान पक्ष से आपको सुख प्राप्त होगा। आज पिता का आशिर्वाद आप पर बना रहेगा।

धनु राशि - आज का दिन आपके लिए सुनहरा रहेगा। आज कुछ समय से चल रहे परिवारिक वाद-विवाद निपटने से घर में सुकून और शांति पूर्ण माहौल रहेगा। तथा आप अपने व्यक्तिगत कार्यों पर ध्यान दे पाएंगे। इस समय कई नई तरह की गतिविधियों में भी व्यस्तता रहेगी और उचित परिणाम मिलेंगे।

मकर राशि - आज का दिन आपके लिए खुशियों से भरा रहने वाला है। आज आप अपनी भावनाओं के साथ दूसरों के भी भावनाओं का ख्याल रखेंगे। आज आप परिवार के साथ घर पर मूवी देखने की प्लानिंग करेंगे। आज सेहत के लिहाज से आप खुद को तंदरुस्त महसूस करेंगे। आज आपको अटके हुए धन की प्राप्ति होगी, जिसका उपयोग आप अपने निजी कार्यों में कर सकते हैं।

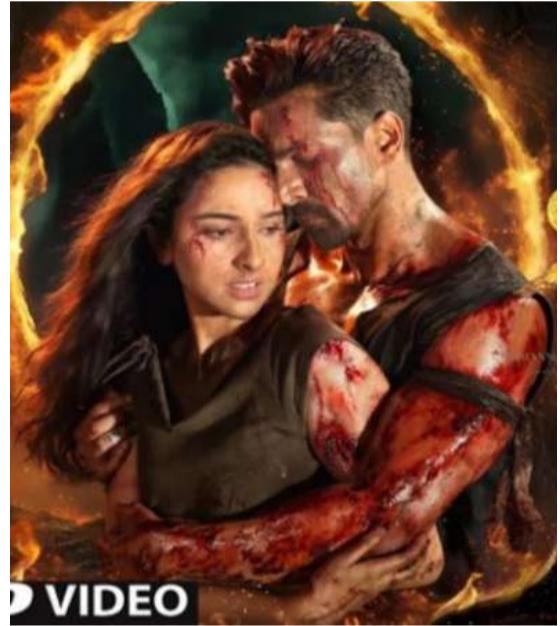
कुम्भ राशि - आज का दिन आपके लिए ठीक-ठाक रहेगा। आज कुछ समय अपने परिवारिक तथा व्यक्तिगत जीवन के लिए निकालना संबंधों में मधुरता लाएगा। आज प्रोफेशनल कार्य प्रणाली में कुछ बदलाव हो सकता है। आज आपका आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा, जिससे घर का माहील खुशनुमा बना रहेगा।

मौन राशि - आज का दिन फेवरेबल रहने वाला है। आज आप कुछ महत्वपूर्ण फैसले ले सकते हैं जो आपकी आर्थिक स्थिति और घर की व्यवस्था ठीक रखने में सहायक होंगे। आज धर्म और सामाजिक कामों में आपकी रुचि हो सकती है। आज व्यापार को बढ़ानें के कुछ नए तरीके आपके दिमाग में आयेंगे।

प्रकाशक एवं स्वामी सागर सूरज, द्वारा सरोतर निवास, राजाबाजार-कहरी रोड, मोतिहारी, बिहार-845401 से प्रकाशित व प्रकाश प्रेस मोतिहारी से मुद्रित, संपादक-सागर सूरज* फोन न.9470050309 प्रसार:-9931408109 ईमेल:-bordernewsmirror@gmail.com वेबसाइट:-bordernewsmirror.com (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार) RNI. N. BIHBIL/2022/88070

**फिल्म सिला से करण वीर मेहरा
का विलेन के रूप में आया पहला
लुक, जहराक बनकर मचाएंगे
स्क्रीन पर तबाही!**

लौंगुड में जब भी किसी खतरनाक विलेन की बात होती है तो दृश्यक कुछ डरावना देखने की उम्मीद करते हैं। बस इसी को ध्यान में रखते हुए करण वीर मेहरा अपनी नई फिल्म में विलेन की भूमिका को निभाने के लिए तैयार हैं। जी हाँ, उनकी आने वाली फिल्म 'सिला' में उनके खलनायक अवतार 'जहराक' की पहली झलक सामने आई है, जो अब तेजी से वायरल हो रहा है। निर्देशक ओमंग कुमार, जो 'मेरी कॉम' और 'सरबजीत जैसी' सशक्त फिल्मों के लिए जाने जाते हैं, अब 'सिला' नाम की एक रोमांटिक-एक्शन फिल्म लेकर आ रहे हैं। इस फिल्म में लीड रोल में हर्षवर्धन राणे और सादिया खतीब दिखाई देंगे, लेकिन जो सबसे ज्यादा सुरुखियां बटोर रहा है, वो है करण वीर मेहरा का खतरनाक और आक्रामक विलेन लुक। करणराणी ने अपने इस लुक को इंस्टाग्राम पर शेयर किया है जो अब फैंस को काफी पसंद आ रहा है। साथ ही ये ऐसा लुक है जिससे करणवीर बिल्कुल भी पहचान में ही नहीं आ रहे हैं। करण वीर ने सोशल मीडिया पर अपना लुक शेयर करते हुए लिखा - खुद हीं खुदा, खुद हीं हँसाफ! करणवीर की इस एक लाइन ने फैंस को उनके किरदार की गहराई और भयावहता का अदाका दे दिया है। पोस्टर में करण वीर लहूतुलान शेरीर, लंबे उलझे बालों और हाथ में तलवार लिए युद्ध के लिए तैयार दिख रहे हैं। उनकी आंखों की आग और शेरीर पर खून के धूधों ने उन्हें एक कूर योद्धा के रूप में दिखाया है। करण वीर का किरदार 'जहराक' फिल्म में काफी 'खतरनाक, छेंटेस और 'डरावना बताया जा रहा है। उनके लुक पर कई फैंस ने भी कमेंट किया है। उनके फैंस को लुक पसंद आया है। कई लोगों ने उन्हें बधाई देते हुए कहा कि उन्हें फिल्म के आने का बेसबी से इंतजार है। फिल्म की कहानी समीर जोशी ने लिखी है, जबकि डायलॉग्स आरंभ एम. सिंह ने तैयार किए हैं। संगीत की जिम्मेदारी अंकित तिवारी, सचेत-परंपरा, श्रेयस पुराणिक और एलेक्सिस एवलिन जैसे प्रतिभाशाली संगीतकारों के पास है। ये टीम पहले ही कई हिट गाने दे चुकी हैं, जिससे उम्मीदें और ऐसी बढ़ गई हैं।



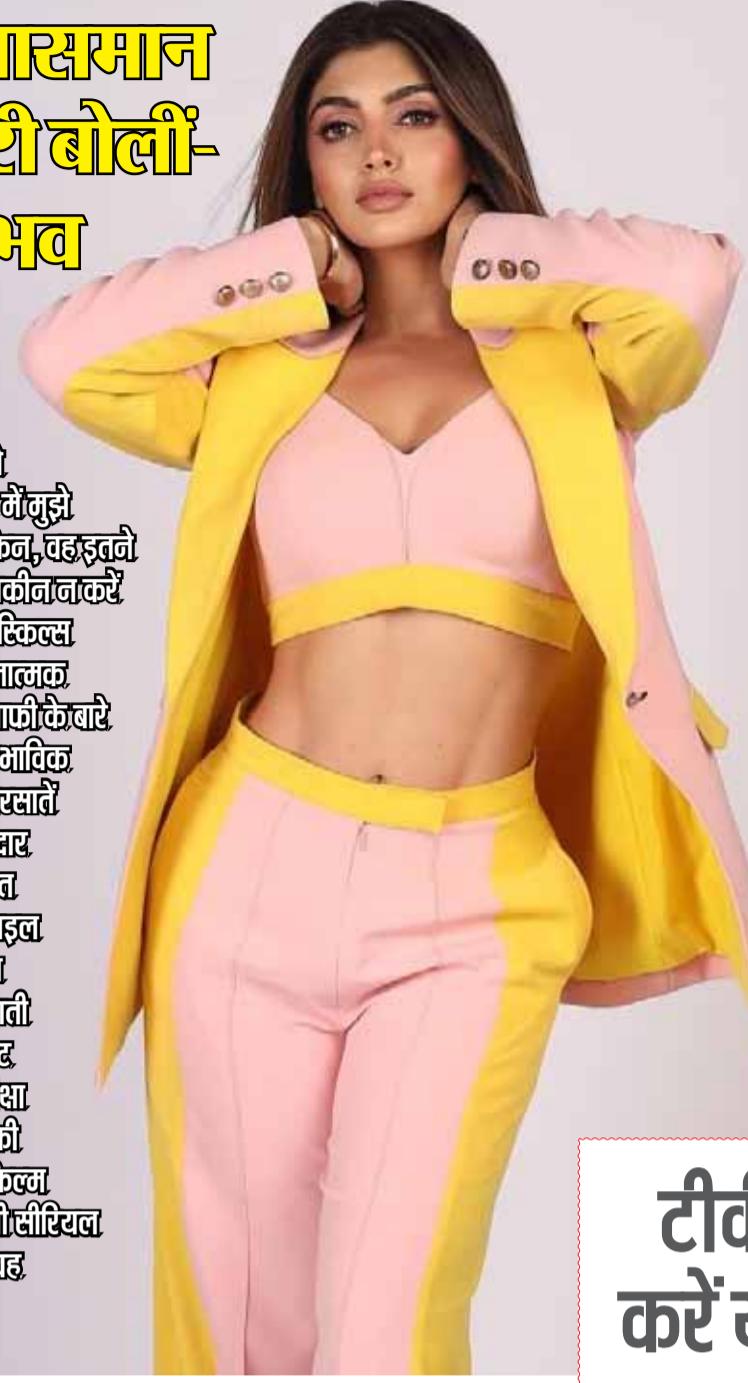
नदेश अगस्त्य और रबिया खातून
की मेघलु चेपिना प्रेम कथा का
दिल छू लेने वाला ट्रेलर जारी, 22
अगस्त को होगी इलीज

यु वा नायक नरेश अगस्त्य की आगामी फिल्म मेघलु चैप्पिना प्रेम कथा, जिसका निर्देशन विपिन ने किया है और सुनेत्रा एंटरटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड के बैनर तले उमा देवी कोटा ने निर्मित किया है, जो अपने भावपूर्ण संगीत, भावपूर्ण टीजर और मधुर गीतों से काफ़ी उत्साह पैदा किया है। कहानी के एक अलग भावनात्मक पहलू को उजागर करने वाले दो अलग-अलग टीजर ने दर्शकों की उत्सुकता बढ़ा दी है और अच्छी उम्मीदें जगा दी हैं। आज, फिल्म का थिएटर ट्रेलर रिलीज हो गया है। एक भावुक महत्वाकांक्षी संगीतकार, जो अपनी महान दाढ़ी के पदचिह्नों पर चलने के लिए दृढ़ है, को अपने पिता के कड़े विरोध का समान करना पड़ता है, जो उसे संगीत में रुचि लेने से मना कर देते हैं। प्रेरणा की तलाश में, वह एक शांत पहाड़ी हृताके में भाग जाता है, जहाँ उसकी मुलाकात एक जीवंत और मनमोहक लड़की से होती है जो उसका नजरिया बदल देती है। व्यक्तिगत संघाओं और भावनात्मक बाधाओं के बीच, उसे अपनी प्रतिमा साखित करनी होती, अपने प्यार को जीतना होगा और तभाव मुशिकलों के बावजूद अपने सपनों को पूरा करना होगा। मेघलु चैप्पिन प्रेम कथा भावनाओं, संर्वश और दिल को छु लेने वाले दृश्यों से बुनी एक मार्मिक प्रेम कहानी का बाबा करती है। निर्देशक विपिन अपनी काव्यात्मक लेखनी और प्रभावशाली शूटिंग के लिए प्रशंसनीय हैं। भायाकार मौजना कृष्णा ने मनोरम दृश्यों को बैठक खूबसूरती से प्रस्तुत किया है, जबकि जरिटन प्रभाकरन का भावपूर्ण बैकगाउंड स्कोर, भावनात्मक क्षणों के साथ मिलकर, कहानी को और भी ऊँचा उठाता है। फिल्म की शैली के हिसाब से प्रोडक्शन वैल्यू उल्लेखनीय है। थोटा थरानी कला निर्देशक हैं और मार्टिंड के रैकेटेश सापदक हैं। मुख्य जोड़ी की केमिस्ट्री कोमल और सहज दोनों लगती है, जो अलग-अलग पलों में नजर आती है। नरेश अगस्त्य एक महत्वाकांक्षी संगीतकार की भूमिका में शानदार लगे हैं, जबकि राबिया खातून उनकी प्रैमिका के रूप में जंगती हैं। राधिका सरथकुमार नरेश अगस्त्य की दाढ़ी के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करती हैं। ट्रेलर ने उच्च स्तर स्थापित कर दिया है, मेघलु चैप्पिने प्रेमा कथा 22 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज के लिए तैयार हो चुकी हैं।



म्यूजिक वीडियो एक आसमान थारिलीज, अकांक्षा पुरी बोली— थानदार रहा अनुभव

अभिनवेरी अकांक्षा पुरी का नया न्यूजिक वीडियो 'एक आसमान था दिलीज हो चुका है।' पुरी के नुत्रिक इसका एफ. वर्जन सुनकर उनके दोगढ़े खड़े हो गए थे। न्यूजिक वीडियो में अकांक्षा के साथ को-स्टार सनम जीहद हैं। वीडियो में थीन को शानदार अंदाज में पेश किया गया है। अकांक्षा ने कहा, शुल्कात में बुझे थोड़ा डरथा, योकि मैं सनम से पहले कभी नहीं मिली थी। लेकिन, वह इस सहज एकटर है कि हमारी केमिस्ट्री तुरंत बन गई। लोग शायद यकीनन कर कि हम पहली बार थ्रिलिंग के दोसरा नहीं। सनम आपनी डांसिंग डिक्स्यु के लिए जाने जाते हैं, लेकिन इस वीडियो में डांस से ज्यादा भावनात्मक तालमेल की ज़खरत थी। अकांक्षा ने बताया, यह गाना के रियोग्राफी के बारे में नहीं, बल्कि मावन औंओं को जोड़ने का था। हमारी केमिस्ट्री ख्वाबाविक रूप से बन गई। अकांक्षा पहले भी इस प्रोडक्शन टीम के साथ 'बरसातों अच्छी लगती हैं' गाने में काम कर चुकी है। उनका अनुभव शानदार रहा। जब टीम ने उन्हें इस गाने के लिए संपर्क किया, तो वह तुरंत इससे जुड़ गई। उन्होंने कहा, न्यूजिक वीडियो आपको अपनी एक इलाओं और अग्नियता की सीमाओं को आजमाने का नौका देते हैं। थ्रिलिंग तेज और एनर्जेटिक होती है, जो दर्शकों के साथ बहारा जुड़ाव बनाती है। मुझे गाने के ऑफर हमेशा उत्साहित करते हैं। यह लंबे फॉर्मेट के अभिनयात्मक फिल्म में एविटंग से अलग। अनुभव देता है। अकांक्षा ने 2013 में तमिल फिल्म 'एलेक्सा पांडियन' से एविटंग करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद साल 2015 में गधुर भंडारकर की फिल्म 'फैलेंट गल्स' से बॉलीवुड में कदम आया। साल 2017 में वह टीवी सीरियल 'विजाहता गणेश' में नाता आदि प्रायशकित के किरदार में दिखी। वह रियलिटी शो 'स्टरवंटर' में काढ़ी गोली की विनाश भी रह चुकी है।



शूटिंग तेज और एनजीटिक होती है, जो दर्शकों के साथ गहरा जुड़ाव बनाती है। मुझे गाने के ऑफर हमेशा उत्साहित करते हैं। यह लंबे फॉर्मेट के अभिनय या फिल्म में एकिटंग से अलग अनुभव देता है। अकांक्षा ने 2013 में तमिल फिल्म 'एलेक्स पांडियन' से एकिटंग करियर की शुरुआत की थी।

टीवी देखते-देखते करें ये एक्सरसाइंज, रहेंगे फिट

आ गर आपको रोजमर्ग की एकसरसाइंज उत्ताऊ लगती है और आप इसे करने में आलस करते हैं तो टीवी देखते हुए ही एकसरसाइंज करना शुरू कर सकते हैं। इससे आपको एकसरसाइंज करने में बोरियत नहीं होती और आप फिट भी रहते। आइए आज हम आपको कुछ ऐसी एकसरसाइंज के बारे में बताते हैं, जिन्हें आप टीवी देखते हुए ही कर सकते हैं और इससे आपका कोई समय बचाव भी नहीं होगा। काउच पुण-अप्स एक बेहतरीन एकसरसाइंज है, जिसे आप टीवी देखते हुए कर सकते हैं। इसके लिए आपको बस अपनी काउच के किनारे पर हाथ रखकर पुण-अप्स करने हैं। यह आपकी छाती, कंधे और बाजुओं को मजबूत बनाता है। इसके अलावा यह आपकी पीठ की मासपेशियों को भी टोन करता है। इसे करने के लिए काउच के किनारे खड़े होकर हाथों को काउच पर रखें, फिर शरीर को नीचे-ऊपर करें। यह कसरत आराम से की जा सकती है। स्क्वाट्स एक सरल और असरदार एकसरसाइंज है, जिसे आप टीवी देखते हुए कर सकते हैं। इसके लिए सबसे पहले खड़े होकर अपने घुटनों को हल्का मोड़ें और फिर धीरे-धीरे नीचे की ओर बैठें जैसे कि आप कुर्झी पर बैठ रहे हों। इस द्वारान अपनी पीठ को सीधा रखें और हाथों को सामने फैलाएं। यह एकसरसाइंज आपके पैरों, नितबों और पेट की मासपेशियों को मजबूत बनाती है। नियमित अभ्यास से आपको बेहतर परिणाम मिल सकते हैं। स्पॉट मार्विंग एक आसान और असरदार एकसरसाइंज है, जिसे आप टीवी देखते हुए कर सकते हैं। इसके लिए आपको बस जगह पर खड़े होकर पैर उठाने होंगे जैसे चल रहे हों। यह आपके दिल की सेहत को बढ़ाता है और पैरों की मासपेशियों को मजबूत बनाता है। इसे करने के लिए खड़े होकर धीरे-धीरे पैर उठाएं और नीचे रखें। यह कसरत आराम से की जा सकती है, जिससे आपको कोई हरे परशानी नहीं होगी। लेग सर्कल्स एक सरल और असरदार एकसरसाइंज है, जिसे आप टीवी देखते हुए कर सकते हैं। इसके लिए आपको बस अपनी टांगों को हवा में उठाकर गोल गोल घुमाना होगा। यह आपकी पैट की मासपेशियों को मजबूत बनाता है और पैरों की टोनिंग करता है। इसे करने के लिए पीठ के बल लें, फिर एक पैर को ऊपर उठाकर गोलाकार गति में घुमाएं। इस प्रक्रिया को दूसरे पैर से भी बोहराएं। बैठे-बैठे पैर उठाना एक आसान और असरदार कसरत है, जिसे आप टीवी देखते हुए कर सकते हैं। इसके लिए आपको बस अपनी टांगों को ऊपर उठाना होगा जैसे कि कुर्झी पर बैठे हों। यह आपकी पैट की मासपेशियों को मजबूत बनाता है और पैरों की टोनिंग करता है। इसे करने के लिए कुर्झी पर बैठकर ढोंगों पैरों को ऊपर उठाएं, फिर धीरे-धीरे नीचे रखें। इस प्रक्रिया को कुछ बार बोहराएं।



फूलों के जाल में युं सजी जान्हवी कपूर

बद्न पर लपेटी साड़ी-
ब्लाउज का ऐसा डिजाइन
देखते रह गए सब

जान्हवी कपूर की साड़ियों का लुक अक्सर वायरल होता है, हालांकि जान्हवी का ये फूलों की साड़ी वाला लुक सबसे ज्यादा शानदार है। गुलाबी और सफेद के खूबसूरत कलर कॉम्बिनेशन वाली ये फूलों की साड़ी में जान्हवी किसी स्वर्ग की आस्तरा से कम नहीं लग रही है। इस साड़ी की एक एक बात बहुत ही ज्यादा खास है। जान्हवी कपूर ने हालिया इवेंट के लिए ये वाली फूलों से बनी साड़ी पहनी थी। लेटेस्ट और बहुत ही ट्रेंडी लुक की इस साड़ी में जान्हवी के कर्क्स काफी हाइलाइट हो रहे थे। उल्टा ओपन पल्ला ड्रेप के साथ जान्हवी ने ये साड़ी पहनी थी। मोगरे की कलियों से और गुलाबी दंग के छोटे छोटे फूलों बनी इस साड़ी का लुक बहुत ही यूनिक था। पिंक साड़ी के साथ जान्हवी ने इस फूलों की चादर को अलग से ड्रेकिया था। ओपन लुक में इसका लुक और भी ज्यादा उभरकर आ रहा था। साड़ी के पल्ले की बॉर्डर भी झाला पैटर्न में थी और लुक में चार चांद लगा रही थी। वहीं ब्लाउज के साथ तो लुक और परफेक्ट लगा। खूबसूरत साड़ी के साथ जान्हवी का प्रिसेस लुक वाला ब्रालेट ब्लाउज काफी सूट कर रहा था। इस ब्लाउज पर भी फूल का वर्क था। ब्रालेट पैटर्न के ब्लाउज का बैक डिजाइन भी कुछ कम नहीं था। इस साड़ी के साथ काफी ऑम्ब्रे ड्रेकेट आ रहा था।



संगीत बच्चों की कम उम्र से ही करता है भावनाओं को पहचानने में मदद

संगीत एक ऐसी कला है, जो मन को सुकून देकर खुशी महसूस करवाने वाला जातू रखती है। चाहे हम खुश हों या उदास हों, संगीत सभी भावनाओं को व्यक्त करने का जरिया माना जाता है। बड़ों के लिए अपनी भावनाओं को समझना आसान होता है, लेकिन बच्चे ऐसा नहीं कर पाते हैं। ऐसे में संगीत उनका सहारा बन सकता है। एक अध्ययन के मुताबिक, संगीत बच्चों द्वारा बच्चों की कम उम्र से ही भावनाओं को पहचानने में मदद कर सकता है। फिलाडेल्फिया के पेन स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड साइंसेज के मनोविज्ञान विभाग के शोधकर्ताओं ने यह अध्ययन किया है। वे संगीत के माध्यम से बच्चों को व्यवहार से जुड़े लक्षणों वाले बच्चों की भावनाओं को समझने का अध्यास करना चाहते थे। जो बच्चे सहनभूति या अपराधबोध जैसी भावनाओं का अभाव प्रदर्शन करते हैं, उनके अक्सराकाल दौरे का गतिशीलता गतिशीलता



है। इसी कारण से शोधकर्ता छोटी उम्र से ही बच्चों को संगीत के माध्यम से भावबोधक बनाने की कोशिश में जुटे थे। शोधकर्ताओं ने इस अध्ययन के लिए फिलाडेलिफ्या के 3 से 5 साल की आयु वाले 144 बच्चों की जांच की थी। उन्हें 5-5 सेकंड की संगीत किलप मुनाई गई थी। इनके जरिए यह देखने का प्रयास किया गया था कि वे खुशी, उदासी, शांति या भय को कितनी अच्छी तरह पहचानते हैं। यह अध्ययन उन बच्चों के सामुदायिक नमूने पर किया गया, जिनमें समग्र रूप से कठोर-भावनाहीन लक्षणों का स्तर कम था। इस अध्ययन के नतीजों को चाइल्ड डेवलपमेंट परिका में प्रकाशित किया गया था। इसमें समने आया कि बच्चे संगीत के माध्यम से भावनाओं की पहचान ज्यादा सटीकता से कर सकते हैं। उम्र के साथ उनका प्रदर्शन भी बेट्टे बन जाता है।

